HSA-C 311

सत्रीय परीक्षा - 2021

बी.ए. विद्यालंकार (संस्कृत ऑनर्स)

विषय - संस्कृत

विवरण - लौकिक संस्कृत साहित्य

समय - 03 घण्टे **पूर्णांक: 70**

उतीर्णांक - 40%

नोटः- प्रश्नपत्र दो खण्डों 'अ' एवम 'ब' में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य है।

(खण्ड -अ)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोटः- किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

निर्देश- प्रश्न संख्या प्रथम एंव द्वितीय में से किसी एक का उत्तर देना अनिवार्य है।

प्र0-1. निम्नांकित श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्

मृदुनि मृगशरीरे पुष्पराशाविवाग्निः।

क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं

क्व च निशितानिपाता वज्रसाराः शरास्ते।।

(ख) असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा

यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।

सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु

प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।।

प्र0-2. निम्नलिखित श्लोको का सप्रसंग अनुवाद कीजिए-

(क) पद्मावती नर्पतेर्महिषौ भवित्री
दृष्टा विपत्तिरय यैः प्रथमं प्रदिष्टा।
तत्प्रत्ययात् कृतमिदं न हि सिद्धवाक्या-
न्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि।।

(ख) परिहरतु भवान् नृपापवादं,

न परुषमाश्रमवासिषु प्रयोज्यम्।

नगरपरिभवान् विभोक्तुमेते

वनमभिगम्य-मनस्विनो वसन्ति।।

प्र0-3. निम्नलिखित विषय पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

(क) प्रस्तावना (ख) सूत्रधार

प्र0-4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक की विषययवस्तु पर प्रकाश डालिए।

प्र0-5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कवि द्वारा वर्णित काव्यात्मक विशेषताओं का सप्रमाण उल्लेख कीजिए।

प्र0-6. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक के प्रथम अंक के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

प्र0-7. टिप्पणी लिखिए-

(क) भास (ख) कालिदास

प्र0-8. "स्वप्नवासवदत्तम्" नाट्क के आधार पर भास की शैली की विवेचना कीजिए।

प्र0-9. प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर कृष्ण मिश्र के कथानकीय योजना को विवेचित कीजिए।

प्र0-10. धीरललित नायक के रूप में राजा उदयन की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(खण्ड-ब)

(दीर्घ उत्तरीय प्रष्न)

नोटः- किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है

प्र0-1. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत भाषा में सप्रसंग अनुवाद कीजिए।

(क) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिंताजडं दर्शनम्।

वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।।

(ख) किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशंड्कित मे

कन्या मयाप्यपहृता न च रक्षिता सा।

भाग्यै; चलैर्महदवाप्त गुणोपधातः

पुत्रः पितुर्जनितरोष इवास्मि भीतः।।

प्र0-2. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) ततो देव्या समुपजाताभिनिवेषमुक्तमेवगस्य दुरात्मनो महामोहहतकस्य मामप्यवज्ञाय प्रवर्तमान समुलमुन्मूलनं करिष्यामिमीति। अदिष्टा चाहं देव्या। यथा गच्छ श्रद्धे ब्रूहि विवेकम्। क्रामक्रोधादीनां निर्जयायोद्योगः क्रियताम्। ततो वैराग्यं प्रादुर्भविष्यति । अहं च यथा-समयं प्राणायामाधनुप्राणनेन युष्मतसैन्यमनुग्रहीष्यामि ।

(ख) दृढतरमपिधाय द्वारमारात्कथंचित्

स्मरणमपरिवृत्तौ दर्शने योषिता च।

परिणतिविरसत्वं देह बीभत्सतां वा

प्रतिमुहुरनुचिन्तयोन्मूलयिष्यामि काममम्।।

प्र0-3. अभिज्ञानशाकुन्तलम के आधार पर चतुर्थ अंक की महत्ता पर विस्तारपूर्वक टिप्पणी लिखिए।

प्र0-4. प्रबोधचन्द्रोदय के आधार पर कृष्णमिश्र की नाट्य कला को उदाहरण सहित समझाइए।

प्र0-5. "उपमा कालिदासस्य" को स्पष्ट कीजिए।

प्र0-6. भवभूति के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

प्र0-7. विस्तारपूर्वक टिप्पणी लिखिए।

(क) श्री हर्ष (ख) शूद्रक

प्र0-8. नाट्य के उद्भव एंव विकास पर विस्तारपूर्वक टिप्पणी लिखिए।